

RANI BIRLA GIRLS' COLLEGE

38, Shakespeare Sarani, Kolkata- 700017



Criterion Name: Criteria 3- Research, Innovations and Extension

Index No: Key Indicator 3.3 - Books and Chapters

Subtitle: 3.3.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national / international conference proceedings per teacher during the year 2022

Title of the book: "Situations and Contexts: NARRATIVES ON NINETEENTH CENTURY BENGAL"

Title of chapter: The Empire, the Raj and the Cattle: Fathoming the Calcutta Epizootic of 1864 and Cattle Diseases in Nineteenth Century Bengal

Author: Dr. Apalak Das

Publication Level: National

Name of Publisher: Hyphen

Year of Publication: 2022

ISBN: 978-81-955317-1-4

Web Link: Not Available

Cover page of the book:

Situations and Contexts

NARRATIVES ON NINETEENTH
CENTURY BENGAL

Editor
Prasanta Ray



HYPHEN

Table of Contents showing the published work:

CONTENTS

Preface IX

Introduction
Prasanta Ray 1

BODY UNDER STRESS

Chapter 1
Swatilekha Maity
Footprints in the Mud : Animal Presence, Metropolis
and Rise of Animal Rights in Colonial India 27

Chapter 2
Apalak Das
The Empire, the Raj and the Cattle : Fathoming
the Calcutta Epizootic of 1864 and Cattle Diseases
in Nineteenth Century Bengal 55

Chapter 3
Sumit Kanti Ghosh
Tropical Climate, Health, Dress and Power :
Imperial Taste and Politics of Clothing in
Early Colonial Bengal 77

MONEY MAKING INITIATIVES

Chapter 4
Bidisha Chakraborty
Early Nineteenth Century Bazaars of Calcutta :
Space for Profit and Conflict 117

First page of the published work:

CHAPTER 2

The Empire, the Raj and the Cattle:
Fathoming the Calcutta Epizootic of
1864 and Cattle Diseases in Nineteenth
Century Bengal

Apalak Das

ABSTRACT

The colonial state had initially contemplated about and prioritized the cattle protection, especially in 1860s, when the cattle disease in Calcutta and its suburbs spread rapidly and caused immense fright amongst the European population. The cattle plague, which was one of the major public health issues not only in the Raj but in the entire Empire, had generated a popular disquiet regarding 'meat consumption'. During the nineteenth century, the increasing urban consumption of dairy products including meat and the domestication of cattle triggered the risk of contagion from infected animals to human. The scholars have also pointed out that due to the repeated occurrence of rinderpest or cattle plague, the reputation and status of veterinaries had largely enhanced, and eventually this profession was formally institutionalized. To some extent, it compels us to assume that the colonial concern on 'saving' the cattle medically had inspired the early nationalists to begin a 'cultural

Title of the book: "TMYS REVIEW September 2022 Stories, Poems, Essays on FOOD & DRINKS (CULTURAL IDENTITY & IDEOLOGY - II)"

Title of chapter: Editor's note

Author: Dr. Sarmila Paul

Publication Level: International

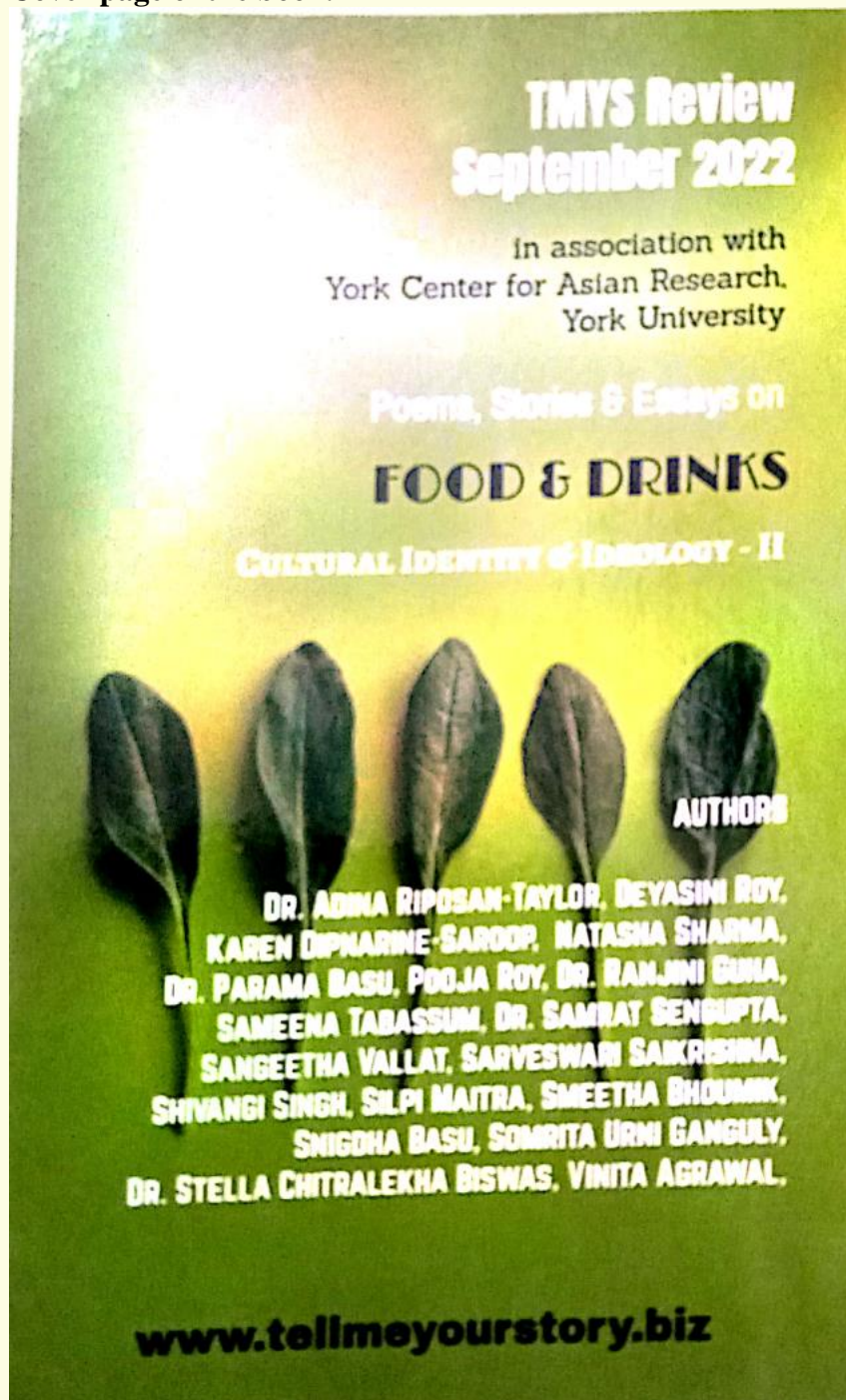
Name of Publisher: Tell Me Your Story

Year of Publication: 2022

ISBN: 979-888923806-5

Web Link: Not Available

Cover page of the book:



Editorial page of the published work:

EDITORIAL

Author: Dr. Sarmila Paul

Bionote: **Dr. Sarmila Paul** is presently teaching as an Assistant Professor at the Department of English, Rani Birla Girls' College affiliated to the University of Calcutta. She has been awarded her Doctoral degree by the Department of English, University of Kalyani, India on Translation Studies in 2019. Her areas of interests are Literature of the Renaissance and the Romantic period, Translation studies, Postcolonial studies, Gender studies, Film and Media Studies.

Title of the book: Pravasi Hindi Sahitya aur Sanskriti: Vividh Vimarsh

Title of chapter: Pravasi (Rachanakar) Nari-Drishti mein stree aur Uska Gaon-Shahar

Author: Dr. Vijaya Singh

Publication Level: National

Name of Publisher: Sahitya Ratnakar

Year of Publication: 2022

ISBN: 978-93-92439-08-7

Web Link: Not Available

Cover page of the book:

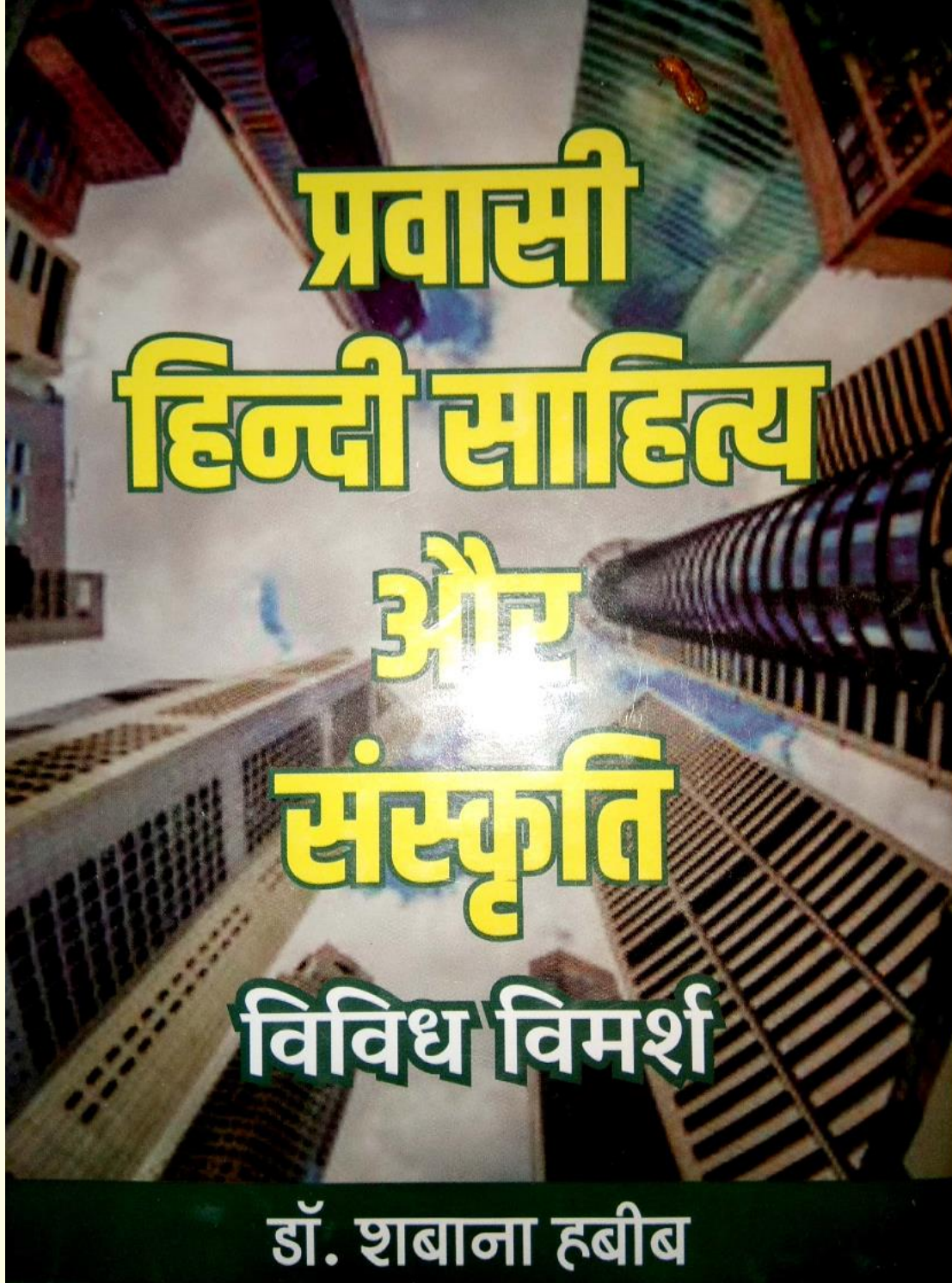


Table of Contents showing the published work:

15.	कनाडा निवासी हिन्दी साहित्यकार प्रो.- सरन घई और उनकी रचना धर्मिता- डॉ. उर्मिला	102
16.	प्रवासी नारी-दृष्टि में स्त्री और उसका गाँव शहर - डॉ. विजया सिंह	112
17.	प्रवासी जीवन की सांस्कृतिक टकराहट का सही दस्तावेज- डॉ. अम्बली टी.	121
18.	हिन्दी कहानी साहित्य को प्रवासी भारतीय लेखिकाओं की देन- डॉ. नीरजा वी एस.	127
19.	मौरीशस ने हिन्दी - डॉ. श्रीजा प्रमोद	139
20.	अंजना सुधीर की कविता में मानवीय संवेदना -डॉ. प्रिया ए.	143
21.	अनिल प्रभा कुमार के घर से गुजरते हुए -स्मिता रजक	149
22.	प्रवासी हिन्दी साहित्य और संस्कृति: एक मूल्यांकन -फरहत परविन	154
23.	प्रवासी हिन्दी कहानियों में चित्रित बाल जीवन -श्रीना एस.	163
24.	मौरीशस में भारतीय संस्कृति-शालिनी सी.	168
25.	यादों की चमक और अन्याय का दमन 'एक खत' व 'रंगों का पंचाग' के विशेष संदर्भ में -रेवती एस	172
26.	प्रवासी साहित्य और अभिमन्यु अनत-दिलना के	179
27.	'दीवार में रास्ता' में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन -डॉ. शबाना हबीब	184

First page of the published work:

**प्रवासी (रचनाकार) नारी-दृष्टि में स्त्री और
उसका गाँव-शहर**

(संदर्भ- नीना पॉल कृत उपन्यास “कुछ गाँव गाँव कुछ शहर शहर”)

-डॉ० विजया सिंह

नीना पॉल के चर्चित उपन्यास “कुछ गाँव गाँव कुछ शहर शहर” की पृष्ठभूमि में उनका गाँव लॉफ़बरो और शहर लेस्टर हैं। लेस्टर ब्रिटेन का एक बड़ा शहर है जो कई गाँवों से मिलकर बना हुआ है। नीना ने स्वयं ही बताया है कि पहले वे लॉफ़बरो में रहती थी और अब (रचना करते वक्त) लगभग तीस वर्षों से उनकी रहनवारी लेस्टर में है। उन्होंने यह उपन्यास वरिष्ठ रचनाकार तेजेंद्र शर्मा की प्रेरणा से लिखना शुरू किया। लॉफ़बरो-लेस्टर पर लिखने के लिए उन्होंने अच्छा खासा होमवर्क किया। तीन सालों की शोध प्रक्रिया और जानलेवा बीमारी से ग्रसित होने के बावजूद वे लगी रहीं। लेस्टर के इतिहास को समझा और इस इतिहास पर रचना की इमारत खड़ी की। उन्होंने स्पष्ट कहा, “मेरा उद्देश्य लेस्टर का इतिहास नहीं यहाँ के रहन-सहन और एशियंस पर उसका प्रभाव के विषय में लिखना था।” नीना ने एक रचनाकार के तौर पर लेस्टर को इतिहास के रूखे तथ्यों में न खोज कर पूरे परिवेश, चरित्रों, परिस्थितियों, शहरी संरचना, आपसी व्यवहार, जीवन और पहचान के संघर्षों में देखा है। लेस्टर(लॉफ़बरो) में ही रहने के कारणवश वहाँ के प्राकृतिक दृश्यों के प्रति रचनाकार का गहरा व्यक्तिगत लगाव दिखता है। ईमानदार मानवीय दृष्टि से उन्होंने शहर में स्त्री को और स्त्री के नजरिए से शहर को देखा है। नीना बेहद लगाव और बेबाक नजरों से लेस्टर को देखती है। उपन्यास पढ़कर यह समझना मुश्किल नहीं है कि रचना का प्रधान चरित्र स्वयं लेस्टर ही है। बाकी सारे किरदार, उनकी कहानियों के तन्तु, अनुभूतियाँ, प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य अंततः मिलकर लेस्टर की आंतरिक-बाह्य चारित्रिक विशेषताओं को निर्मित करते हैं।

रचनाकार लेस्टर की व्यवस्था को ब्रिटेन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की कोशिश करती हैं, “मैं 1973 से लेस्टर में हूँ। यहाँ की इकोनोमी का उत्कर्षापकर्ष देखा है... माइर्नर्स की दो हड़ताल देखी हैं जो ब्रिटेन की एकोनोमी के अपकर्ष का कारण बनी।” लेस्टर (लॉफ़बरो) के विकास और पतन की कथा तथा उसका स्त्री

Title of the book: Unis O Bis Shataker Bangla: Bahumatrik Adhare

Title of chapter: Kaj Katha: Meyeder Kajer Jogot

Author: SANJUKTA GHOSH

Publication Level: National

Name of Publisher: Lok Seva Shibir

Year of Publication: 2022

ISBN: 978-81-956400-6-5

Web Link: Not Available

Cover page of the book:

উনিশ ও বিশ শতকের বাংলা বহুমাত্রিক আধারে

সম্পাদনা
কেয়া দত্ত



Table of Contents showing the published work:

অভিজিৎ সাহা
১৯৩০ সালের গাড়োয়ান ধর্মঘট ১২৮
সাময়িক পত্রপত্রিকার আলোকে
স্বাধীন সরকার
মানচুর্ম জেলার স্বাধীনতা আন্দোলনে গাফিজি ১৪৬
কৌশিক চন্দ
ঈশামবাজারের গালা শিল্প : বঙ্গসংস্কৃতির এক বিলুপ্ত অধ্যায় ১৬৬

সংযুক্তা ঘোষ কাজ-কথা ১৭৯ মেয়েদের কাজের জগৎ (১৯২০ - ১৯৪০)

First page of the published work:

কাজ-কথা মেয়েদের কাজের জগৎ (১৯২০ - ১৯৪০) সংযুক্তা ঘোষ

ভারতবর্ষে, তথা অবিভক্ত বঙ্গদেশে, আধুনিক পাশ্চাত্য মতের খ্রীশিক্ষার প্রথম আলো জ্বালানো হয়েছিল উনিশ শতকে। এই খ্রীশিক্ষার অনুগামী হয়ে ধীরে ধীরে ভারতীয় ও বঙ্গ সমাজে প্রবেশ করেছিল নারীর আধিকারের প্রশ্ন আর নারীর ক্ষমতায়ন। ঊনবিংশ শতকের শেষে আর বিংশ শতকের শুরুতে দেখা গিয়েছিল ঘর-গৃহস্থালির গণ্ডি পেরিয়ে ভারতীয় নারী পা রেখেছে কর্মজগতে। নিজ শক্তিতে অর্জন করছে নিজেদের জীবিকা। উনিশ শতকের খ্রীশিক্ষা আর তার পরবর্তীকালে নারীর অবস্থান নিয়ে বহু আলোচনা বিতর্ক আগেও হয়েছে এবং পরেও হবে। আলোচ্য প্রবন্ধে কলকাতা শহরে সাধারণ বাঙালি মহিলাদের মধ্যে কীভাবে বিংশ শতকের প্রথমার্ধে, বিশেষত দুই মধ্যবর্তী দশকে, অর্থাৎ ১৯২০ থেকে ১৯৪০-এর মধ্যে, কর্মলাভের লক্ষ্যে শিক্ষা জনপ্রিয় হয়েছিল, তার একটি প্রারম্ভিক সংক্ষিপ্ত বিবরণ দেওয়া হল।

এই সময়টি বেছে নেওয়ার কারণ, এই দুই দশক ইতিহাসের দৃষ্টিতে অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ, দুই বিশ্বযুদ্ধের মধ্যবর্তী পর্বে সমাজ ও দেশ বিভিন্ন ঘটনার অভিঘাতে বদলে যচ্ছিল খুব দ্রুতগতিতে। সংসারের দৈনন্দিন সমস্যা, মূল্যবৃদ্ধি, সমাজের অর্থনৈতিক সমস্যা, এই সবের জন্য বাঙালি গৃহস্থ ঘরের মেয়েরা পা রেখেছিল বৃহত্তর কাজের জগতে। তৎকালীন রাজনৈতিক ও সামাজিক পরিস্থিতিও তাদের অনুকূলে ছিল। ১৯৪০-এ দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ-পরবর্তী সময়ে দেখা গিয়েছিল যে, পূর্ববর্তী এই দুই দশকের যাত্রাপথ পরবর্তীকালের সব শ্রেণির মেয়েদের এগিয়ে আসার পথ সুগম করেছিল।

ঊনবিংশ শতকের গোড়াতে অবিভক্ত বাংলাদেশে নারী ছিল সব অর্থেই অন্তরালবাসিনী। তাদের স্থান ছিল সমাজে পরজীবী রূপে। বিবাহে পাওয়া স্বীকৃতি ছাড়া তারা পিতা বা স্বামী, কারুরই সম্পত্তির অধিকারী হত না। তাদের জীবন অতিবাহিত হত পিতা, স্বামী, পুত্র অথবা ভ্রাতার মুখাপেক্ষী হয়ে। এই নির্ভরশীলতার পুরোটাই ছিল অর্থনীতির কারণে।

Name of the conference: International Conference of Bangiya Itihas Samiti Kolkata held at Surendranath College, Kolkata on 25th and 26th March 2022

Title of the proceedings of conference: Eshana 2

Title of chapter: Construction of Nation through Service: Gandhi Seva Sangh and All India Village Industries Association

Author: Sayantani Maitra

Publication Level: National

Name of Publisher: Bangiya Itihas Samiti Kolkata,

Year of Publication: 2022

ISBN: 978-81-961439-0-9

Web Link: Not Available

Cover page of the book:

ESHANA

2

Editor
Soumitra Sreemani

Aruna Prakashan

2, Kalidas Singha Lane, Kolkata-7000 009

in association with



বাংলার ইতিহাস সমিতি কলকাতা

Bangiya Itihas Samiti Kolkata

Table of Contents showing the published work:

Content		
01. Sanjukta De	Curious World of Architectures of Sherpa Community: A Detailed Study	7
2. Indira Banerjee	Mathura: An Early-Historic Multi-Religious Site (From the Late Centuries BCE to the Early Centuries CE)	20
3. Poulami Ray	Cultural Dynamisms within the landscape of Vidarbha between 1 st Century BCE to 2 nd Century CE	30
4. Titas Sarkar	Different Aspects of Poison As Gleaned From the Jātaka Narratives	39
5. Nandini Mitra	The Spice Trail: The Circulation Route of Cassia and Cinnamon (6 th Century BCE- 1 st Century CE)	46
6. Amrita Karmakar	A Historical Analysis of the Background and Socio-Cultural Influence of the Terracotta Temples in Bishnupur	54
7. Kuntak Chatterjee	Merchants at SiyāoGi : Understanding Economic Activities in Sacred Spaces in Early Medieval India	62
8. Swarnali Biswas	Representation of feminine in the ballad of <i>Mahua</i>	69
9. Jayati Nag	Migration Pattern of Bengal Rail Labourers 1906-1947	76
10. Srinwanti Mukhopadhyay	An Effeminate Bengali: A Construct of the Colonial Rule	88
11. Arijita Manna	Adulteration of Salt in Early Nineteenth Century Bengal (1800-1819)	94
12. Deblina Biswas	Knowing the Country: Era of Warren Hastings	100
13. Abhijit Saha	Advent and Evolution of the Calcutta Tramways as an Organised Mass Surface Transit System (1873-1902): A Historical Perspective	113
14. Sayantani Maitra	Construction of Nation through Service : Gandhi SevaSangh and All India Village Industries Association	123
15. Bibek Broto Talukder	The Anti-Caste Politics of Rammanohar Lohia	133
16. Aritra Majumdar	Women Journalists in Early Postcolonial India and Pakistan: Challenges, Achievements and Activism in Newspapers (1947-1971)	141
17. Sabyasachi Chatterjee & Suraj Pal	History of Amateur Astronomy in India: A Preliminary Probe	149
18. Debasree De	Indigenous Activism in Neo-liberal India	158
19. Debarati Ganguly	Early Indian Connection with Champa and Cambodia: A Reflection through Phanindra Nath Bose's Writings	166

First page of the published work:

Construction of Nation through Service: Gandhi Seva Sangh and All India Village Industries Association

Sayantani Maitra*

Abstract: Mohandas Karamchand Gandhi's entry in Indian politics changed the course of India's freedom struggle from 1920s onwards to a distinct direction hitherto unperceived. This happened owing to his placing village and its reconstruction at the core of nation's building process. Gandhi had throughout prioritized a wide-ranging socio-economic freedom as he envisioned that fight for only political freedom would doom future India's progress. This vision was turned into action more articulately from 1930s onwards as he discerned that only *Khadi*, his one of the major symbols of unification and economic self sufficiency, could not effectively contribute in nation's construction process. For a comprehensive growth of India he accentuated an all-around development for India's villages through removal of untouchability, Basic National Education, prohibition, village health and hygiene, communal unity, other village industries, village sanitation etc. All these produced Gandhi's concept of Constructive Work or Constructive Programme which was determined to be apolitical in nature since its inception. This notion led him foregrounding establishment of voluntary organisations and associations free from the purview of deep rooted political organisations like Congress. The following article will talk about two such associations, namely Gandhi SevaSangh and All India Village Industries Association. These two associations flourished as a result of Gandhi's political frustration and realisation after disbanding Civil Disobedience movement. Besides discussing objectives, activities and persistent factionalism within these two associations, the article will also try to situate these two apolitical bodies within the notional purview of the Constructive Work.

Keywords: Mahatma Gandhi, Congress, Village, Constructive Work, Gandhi SevaSangh, All India Village Industries Association

Title of the book: Unis O Bis Shataker Bangla : Bahumatrik Adhare

Title of chapter: Vidyasagarer "Bangalar Itihas": Ekti Somoy O Mononer Protifolon

Author: Sayantani Maitra

Publication Level: National

Name of Publisher: Lok Seba Shibir

Year of Publication: 2022

ISBN: 978-81-956400-6-5

Web Link: Not Available

Cover page of the book:

উনিশ ও বিশ শতকের বাংলা বহুমাত্রিক আধারে

সম্পাদনা
কেয়া দত্ত



Table of Contents showing the published work:

সূচি

কিংশুক দাস
ঔপনিবেশিক কালের আদমশুমারি এবং কোচ-রাজবংশী ২১
একটি সংক্ষিপ্ত অধ্যয়ন (১৮৭২ - ১৯১১)

সুতপা ঘোষ দস্তিদার
দক্ষিণ-পশ্চিম সীমান্ত-বাংলার এক প্রান্তিক জনজাতি ৩৯
একটি সামাজিক প্রতিফলন

সায়ন্তনী মৈত্র
বিদ্যাসাগরের 'বঙ্গালার ইতিহাস' ৫৬
একটি সময় ও মননের প্রতিফলন

দেবারতি ব্যানার্জি
রামকৃষ্ণ ও স্ত্রীশিক্ষা ৬৮
স্বামী বিবেকানন্দ এবং গৌরী পুরী

অনামিকা চ্যাটার্জি
বাংলার সংস্কৃতির ঐতিহ্যবাহী শিক্ষায়তন হিসেবে হুগলি মহসিন কলেজ ৮৫
এর অতীত কালের ও বর্তমান সময়ের অবদান সম্পর্কে একটি
সমালোচনামূলক নিরীক্ষণ

কেয়া দত্ত
দেশজ উদ্যোগে চিকিৎসাবিজ্ঞানচর্চা কেন্দ্রের প্রতিষ্ঠা ও বিকাশ ৯৬
আর. জি. কর মেডিক্যাল কলেজের প্রতিষ্ঠা

অপলক দাশ
কলকাতার কুঠেরা ১১৪
কলকাতা কুঠাশ্রম ও ঔপনিবেশিক সমাজ (১৮১১ - ১৯৫৬)

First page of the published work:

বিদ্যাসাগরের 'বাঙ্গালার ইতিহাস' একটি সময় ও মননের প্রতিফলন

সায়ন্তনী মৈত্র

অষ্টাদশ শতকের দ্বিতীয় ভাগ ছিল ব্রিটিশদের বাংলায় আধিপত্য স্থাপনের সময়। এটি ছিল একটি ক্রমাগত পদ্ধতি, যাকে সাফল্যমণ্ডিত করার জন্য অন্যান্য উপাদানের মত তখনও আধুনিক ইতিহাসচর্চার ধারা এ দেশে পরিচয় ঘটানো ব্রিটিশ সরকার প্রয়োজন অনুভব করেনি। সমগ্র অষ্টাদশ শতক জুড়ে ফারসি ভাষায় সুবা বাংলার উপর বহু ধারাবিবরণী, উপাখ্যান এবং আত্মজীবনী রচিত হয়েছিল। এই জাতীয় রচনার লেখক ছিলেন মূলত প্রাক-ঔপনিবেশিক সুবা বাংলার নবাবকুলের অনুগত কিংবা ক্ষয়িষ্ণু মুঘল শাসনের অধীনস্থ কোন প্রাদেশিক উচ্চপদস্থ কর্মচারী। স্বাভাবিকভাবেই তাঁদের লেখাগুলিতে একতরফা আনুগত্যের প্রতিফলন ঘটেছিল। ভারতে ইতিহাসচর্চার এর পরের ধারাটি ছিল ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির কর্মচারী অথবা বণিক দ্বারা রচিত ইংরেজি ভাষায় ভারত অথবা বাংলার ইতিহাস। এই রচনাগুলি ছিল মূলত প্রচলিত ফারসি ভাষার গ্রন্থ থেকে বহুলাংশে সূত্রনির্দেশিকা ব্যবহারের ভিত্তিতে লিখিত অথবা সরাসরি ফারসি গ্রন্থ থেকে অনুবাদিত। এই পরিস্থিতিতে ১৭৮৪ সালে কলকাতায় এশিয়াটিক সোসাইটির প্রতিষ্ঠা একটি নতুন মাইলফলক হিসেবে সংযোজিত হয়। বাংলা ভাষায় ইতিহাসচর্চা সম্ভব হয় যখন ১৮০২ সালে প্রতিষ্ঠিত ফোর্ট উইলিয়াম কলেজের তিনজন পণ্ডিত - রামরাম বসু, রাজীবলোচন মুখোপাধ্যায়, মৃত্যুঞ্জয় বিদ্যালংকার - কলেজ কর্তৃপক্ষের নির্দেশে তরুণ কোম্পানি আমলাদের বাঙালির ভাষা এবং সংস্কৃতি বিষয়ে শিক্ষাদানের জন্য বই লেখেন। যদিও এই বইগুলির একটিও পাশ্চাত্য ইতিহাসচর্চার পদ্ধতি অনুসরণ করে লেখা হয়নি। ফোর্ট উইলিয়ামের পণ্ডিতদের রচিত গ্রন্থগুলি পৌরাণিক ইতিহাসচর্চার ঐতিহ্যের অন্তর্গত ছিল। আধুনিক পাশ্চাত্যধারার ইতিহাসচর্চার প্রবণতার সাথে এ দেশের প্রথম সর্বাঙ্গীণ পরিচয় ঘটে জেমস মিলের ১৮১৭ সালে প্রকাশিত 'The History of British India'-র মধ্য দিয়ে।

Title of the book: Interrogating Crises and Configuring Responses: Indian Perspectives

Editor: Sayantani Maitra

Publication Level: National

Name of Publisher: Bharata Vidya Charcha Kendra

Year of Publication: 2022

ISBN: 978-81-956177-0-8

Web Link: Not Available

Cover page of the book:

**INTERROGATING
CRISES AND CONFIGURING
RESPONSES : INDIAN
PERSPECTIVES**

With Foreword by
RAJ SEKHAR BASU



Edited by
DAMRUPANI BHATTACHARYYA
&
SAYANTANI MAITRA

Editorial page of the published work:

Editorial Note

Section I

Very few events in history have so far been successful in invoking the collective sense of human experiences. In modern times most often this sense of collectiveness is rather invoked through different forms of media. In the last century such a global media sensation was Apollo 11's landing on the moon followed by the first human stepping on its surface. It was watched live by 600 million people globally.¹ The Corona virus or Covid-19, which first broke out in China in 2019, later turning into a global pandemic by the turn of the year and affecting all types of stability starting from mental health to socio-economic security, is one such phenomenon of bringing together that sense of togetherness. In social media a hash tag stating 'we are together in this' had gone viral even. India is no exception where this pandemic till now has claimed 504,078 lives, while 42,339,611 people have so far been infected, according to official report.² Every conspicuous and inconspicuous aspect of an Indian's life has been pricked by this virus's tentacles, leaving many lives and their memories altered permanently. Indians with deep rooted socio-economic backgrounds have managed to survive through it. However people living at the edge of our society were blown away when the virus first struck India. We had watched in 2020 many such pictures in various news channels which made us learn how far vulnerability, insecurity and an empty stomach could push someone to the gloomiest corner. The pandemic have pushed about 32 million Indians out of the middle class, undoing years of economic gains, lowering down nation's standard of living altogether.³ During the first four phases of the lockdown, Indian women filed more domestic violence complaints than recorded in a similar period in the last 10 years.⁴ A generation of young learners is also gravely impacted

Title of the book: Rajpothe Tram Biborton obhighat o Kolkata somaj jibon 1873-1947

Author: Abhijit Saha

Publication Level: National

Name of Publisher: Bookpost

Year of Publication: 2022

ISBN: 9789394999107

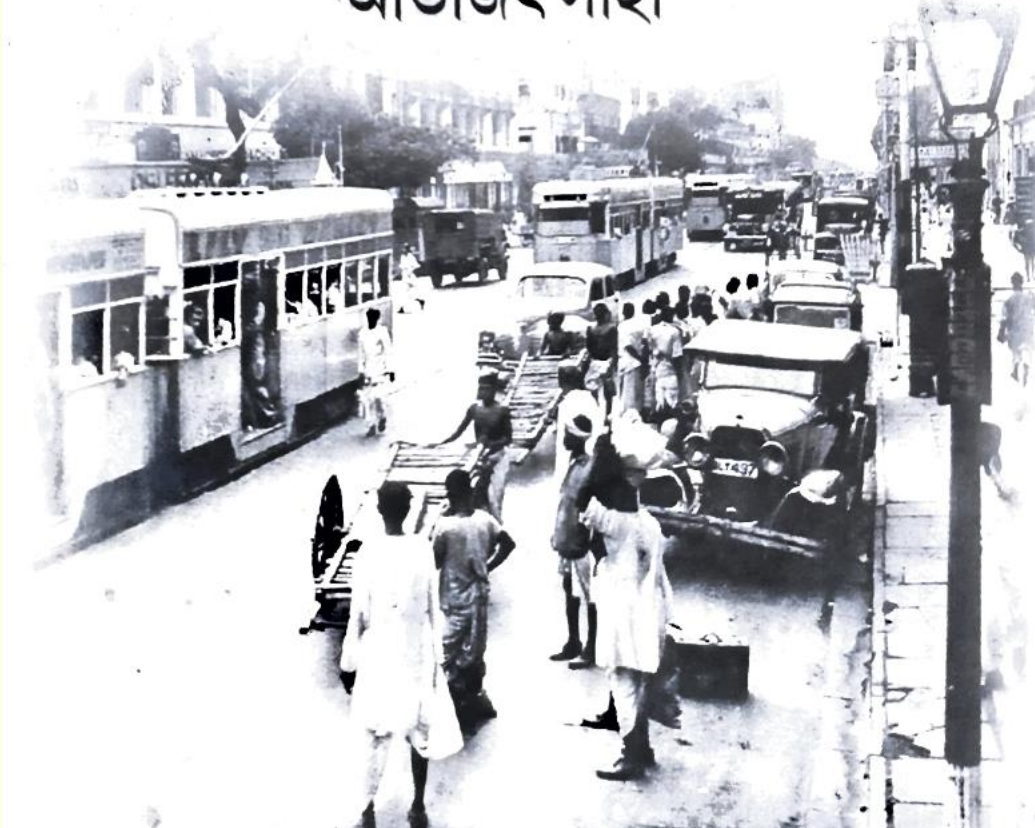
Web Link: Not Available

Cover page of the book:

বঙ্গপথে ট্রাম

বিবর্তন অভিঘাত ও
কলকাতার সমাজজীবন
১৮৭৩-১৯৪৭

অভিজিৎ সাহা



Page showing information related to the published book:

Rajpothe Tram: Bibortan, Avighat O Kolkatar Samajjibon
1873-1947
by
Abhijit Saha

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই গ্রন্থের কোনো
অংশেরই কোনোরূপ পুনঃপ্রকাশ বা প্রতিলিপি করা যাবে না।
এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা নেওয়া হবে।

প্রকাশক: অরূপ পাল
বুকপোস্ট পাবলিকেশন
৭ নবীন কুণ্ডু লেন, কলকাতা-৭০০ ০০৯
যোগাযোগ: ৯৫৬৪৮৩৯৪০১
প্রথম প্রকাশ: নভেম্বর, ২০২২
© বুকপোস্ট পাবলিকেশন
প্রচ্ছদ পরিকল্পনা: মৃগাল শীল
যান্ত্রিক সহায়তায়: কালিদাস হালদার
বর্ণসংস্থাপনায়: এ পি লেজার
ফোন নং: ৯৩৩৯৬৭৯৯২১
মুদ্রণ: কমলা প্রেস
২০৯এ বিধান সরণি, কলকাতা ৭০০০০৬